ब्रह्माकुमारियों द्वारा अंधश्रध्दायुक्त भक्तिमार्ग की रिहर्सल-1

ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा आम जनता को यह समझाया जाता है कि **5000** वर्ष के चतुर्युगी मनुष्य सृष्टि चक्र में मनुष्यात्माएँ चौरासी जन्म लेती हैं। पहले दो युगों में अर्थात् सतयुग और त्रेतायुग में कोई भक्ति नहीं होती; किंतु द्वापरयुग में देहभान के कारण, दु:ख-अशांति प्रारंभ होने पर, भक्ति प्रारंभ होती है। मंदिर बनाकर, शिवलिंग के रूप में शिव की, मूर्तियों/चित्रों के रूप में देवी-देवताओं की और बाद में जड़ वस्तुओं या पेड़-पौधों और जानवरों के रूप में भी भक्ति की जाती है। ईश्वर तथा सुख-शांति की प्राप्ति के लिए यज्ञ, जप, तप, तीर्थ यात्राएँ, गंगा स्नान, दान-पुण्य आदि करते हैं। द्वापर और कलियुग में, **63** जन्मों से की जा रही भक्ति का लक्ष्य तो सुख-शांति प्राप्त करने का था, किंतु अव्यभिचारी भक्ति के स्थान पर व्यभिचारी भक्ति करने के कारण, न तो अविनाशी सुख-शांति की प्राप्ति हुई, न ज्ञान मिला और न भगवान। गीता में भी लिखा हुआ है कि यज्ञ, जप, तप, पूजा इत्यादि से भगवान की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

जब कलियुग अंत में भक्ति पूर्णतया तमोप्रधान हो जाती है, धर्म के नाम पर अधर्म फैल जाता है, मनुष्यों का नैतिक पतन हो जाता है, तब निराकार परमपिता परमात्मा शिव को स्वयं इस धरती पर अलौकिक अवतरण लेना पड़ता है। वे माँ के गर्भ से नहीं, अपितु किसी साधारण वृध्द, अनुभवी मनुष्य (प्रजापिता ब्रह्मा) के तन में प्रवेश कर हमें भक्ति का फल ज्ञान देते हैं। उनके मुख से ईश्वरीय ज्ञान सुनाकर वे एक ईश्वरीय ब्राह्मण परिवार की स्थापना करते हैं, जो कि बाद में ब्रह्माकुमारी संस्था का रूप ले लेता है। इस संस्था के संस्थापक दादा लेखराज के जीवित रहने तक, पुरुषोत्तम संगमयुग में परमपिता शिव द्वारा प्रारंभ किये गए इस ज्ञानमार्ग में भक्तिमार्ग की किसी रसम-रिवाज़ का अंशमात्र भी नहीं था।

जैसे किसी भी नाटक का मंचन होने से पहले उसकी तैयारी या रिहर्सल की जाती है, उसी प्रकार **5000** वर्ष के इस नाटक तथा भक्तिमार्ग की रिहर्सल **100** वर्ष के पुरुषोत्तम संगमयुग में की जाती है। रामायण, महाभारत आदि की रिहर्सल भी इसी संगमयुग में ब्रह्माकुमार-कुमारियों के परिवार में होती है। पाण्डव, कौरव, यादव भी यहीं होते हैं। इस ईश्वरीय परिवार में दो प्रकार के सदस्य होते हैं। एक तो वो जिनकी भक्ति पूरी तरह समाप्त हो जाती है तथा वे केवल ज्ञान तथा भगवान की याद के द्वारा आध्यात्मिक साधना करने में व्यस्त रहते हैं; किंतु कुछ सदस्य, जिनकी भक्ति पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई होती है, वे सन् **1969** में, दादा लेखराज के देहावसान के बाद इस ज्ञानमार्ग में भी अंधी भक्ति के बीज बोते रहते हैं। सन् **1969** के बाद निराकार परमपिता शिव के बदले हुए साकार व्यक्तित्व एवं स्थान को न पहचान पाने के कारण ब्रह्माकुमारी संस्था के ये सदस्य भक्तिमार्ग की तरह ज्ञानमार्ग में भी देहधारियों के चित्र प्रदर्शित करने, भगवान को भोग लगाने, गीत सुनने-सुनाने, आध्यात्मिक साधना के लिए मंदिरों जैसा वातावरण सृजित करने, ब्रह्माकुमारी संस्था

के विभिन्न आश्रमों में तीर्थ यात्राएँ करने-कराने, वरिष्ठ ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियों की भक्तिमार्गीय गुरुओं की तरह सेवा करने, कलियुगी मंदिरों की तरह खुले आम दान लेने आदि का कार्य करने लग पड़ते हैं, जो कि स्वयं परमपिता शिव द्वारा दादा लेखराज (उर्फ ब्रह्मा बाबा) के मुख से सुनाई गई ज्ञान मुरलियों का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन है; किंतु ज्ञानमार्ग में भक्तिमार्गीय शूटिंग या रिहर्सल में उनका कोई दोष नहीं है।

जब ईश्वर द्वारा स्थापित अलौकिक परिवार में ही भक्तिमार्ग की शूटिंग की तमोप्रधान अवस्था हो जाती है, तब परमपिता शिव कंपिल, उत्तर प्रदेश से अपने नए शारीरिक माध्यम के द्वारा पहले इस अलौकिक परिवार (ब्रह्माकुमार-कुमारियों) को इस भक्ति से वैराग्य दिलाकर अति गुह्य सच्चा गीता ज्ञान देते हैं, जिससे वे इसी जन्म में नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी समान बन सकें। वर्तमान समय गुप्त एवं साधारण वेश में चल रहे परमपिता शिव के पार्ट को जो पहचान कर ईश्वरीय ज्ञान को जीवन में धारण करते हैं, वही सच्चे पाण्डव कहलाते हैं; जो परमपिता शिव के साकार पार्ट को जानते तो हैं, पर न मानते हैं और न उनकी श्रीमत पर चलते हैं, कौरव कहलाते हैं और जो इस ईश्वरीय संदेश को सुनकर भी अनसुना कर देते हैं, कलियुगी अल्पकालिक सुखों को भोगने में ही लगे रहते हैं, वे यादव कहलाते हैं अर्थात् जो परमपिता के साकार पार्ट को न जानते हैं, न मानते हैं और न चलते हैं।

ओम शांति